TDC PART- I HINDI HONS

Paper- I **'पुराभारती'**

शे.शं.मि./ई.कं06/प्र.खं. हि.प्र.

अमीर खुसरो की काव्य-प्रतिभा

लोक जीवन और लोक भाषा के भाषिक सांस्कृतिक समन्वय के पुरोधा कवि अमीर खुसरो हिंदी की जातीय परंपरा के वाहक हैं | खुसरो मूलतः फ़ारसी के कवि हैं | फ़ारसी भाषा पर उनका अप्रतिम अधिकार था | उनकी गणना महाकवि फिरदौसी शेखसादिक और निजामी फारस के महाकवियों के साथ होती है | फ़ारसी काव्य के लालित्य और सरसता के कारण ही अमीर खुसरो को 'हिंदी की तूती' कहा जाता है | यद्यपि खुसरो की महत्ता उनके फारसी काव्य पर आश्रित है किन्तु उनकी लोकप्रियता का कारण उनकी हिन्दवी की रचनाएँ हैं | हिन्दवी में काव्य-रचना करनेवालों में अमीर खुसरो का नाम सर्वप्रमुख है | अरबी, फ़ारसी के साथ-साथ अमीर खुसरो को अपने हिन्दवी ज्ञान पर भी गर्व था |

उन्होंने स्वयं कहा है –" मैं हिंदुस्तान की तूती हूँ | अगर तुम वास्तव में मुझसे जानना चाहते हो तो हिन्दवी में पूछो, मैं तुम्हें अनुपम बातें बता सकूँगा |" अमीर खुसरो ने कुछ रचनाएँ हिंदी या हिन्दवी में भी की थीं, इसका साक्ष्य स्वयं उनके इस कथन में प्राप्त होता है –

"जुजबे चंद नज्में हिंदी नज़रें दोस्तां करदाँ अस्त |"

अमीर खुसरो के नाम से हिंदी में पहेलियाँ, मुकरियाँ, दो सखुने और कुछ गज़लें प्रसिद्ध हैं | इसके अतिरिक्त उनका फारस-हिंदी कोश खालिकबारी भी इस प्रसंग में उल्लेखनीय है | अमीर खुसरो मध्य एशिया की लाचन जाति के तुर्क सैफुद्दीन के पुत्र थे | उनका जन्म 652 हि. में एटा (उत्तर प्रदेश) के पटियाली नामक कस्बे में हुआ था | लाचन जाति के तुर्क चंगेज खाँ के आक्रमणों से पीड़ित होकर बलबन (1266 -1286 ई.) के राज्यकाल में शरणार्थी के रूप में भारत में आ बसे थे | सात वर्ष की अवस्था में खुसरो के पिता का देहांत हो गया किन्तु खुसरो की शिक्षा-दीक्षा में बाधा नहीं आयी | अपने समय के दर्शन तथा विज्ञान में

उन्होंने विद्वत्ता प्राप्त की, किन्तु उनकी प्रतिभा बाल्यावस्था से ही काव्योन्मुख थी | किशोरावस्था में उन्होंने कविता लिखना प्रारंभ किया और बीस वर्ष की आयु में वे कवि के रूप में प्रसिद्ध हो गए | उनमें व्यावहारिक बुद्धि प्रबल थी, इसलिए सामाजिक जीवन की अवहेलना उन्होंने कभी नहीं की | खुसरो में जहाँ एक ओर एक कलाकार की उच्च कल्पनाशीलता थी, वहीं दूसरी ओर वे अपने समय के सामाजिक जीवन के प्रति भी एक सजग दृष्टि सम्पन्न कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए | उस समय कलाकारों और कवियों के लिए आजीविका का सबसे बड़ा साधन राज्याश्रय ही था | खुसरो ने भी अपना सम्पूर्ण जीवन राज्याश्रय में ही बिताया | उन्होंने गुलाम खिलजी और तुगलक, तीन अफगान राजवंशों तथा ग्यारह सुल्तानों का उत्थान-पतन अपनी आँखों से देखा |

राज्याश्रय में रहते हुए भी राजनीतिक दाँव-पेंच से अपने को सदैव अनासक्त रखते हुए भी खुसरो निरंतर एक कवि-कलाकार और संगीतज्ञ ही बने रहे | खुसरो की व्यावहारिक बुद्धि का सबसे बड़ा प्रमाण यही है कि वे जिस आश्रयदाता के कृपापात्र और सम्मानभाजन रहे, उसके हत्यारे उत्तराधिकारी ने भी उन्हें उसी प्रकार आदर और सम्मान प्रदान किया |

खुसरो हिन्दवी जैसी एक सामान्य बोली को काव्यभाषा के स्तर तक ले जाने वाले तथा खड़ीबोली को साहित्यिक प्रतिष्ठा देनेवाले प्रारंभिक कवियों में अग्रगण्य हैं | खुसरो की अधिकांश रचनाएँ अलाउद्दीन के राज्यकाल की हैं | 1298 से 1301 ई. के मध्य उन्होंने पाँच रोमांटिक मसनवियाँ लिखीं –

1. मल्लोल अनवर

2.शिरीन खुसरो

3.मजनू लैला

4.आईन-ए-सिकंदरी और

5.हश्त विहिश्त |

ये सभी रचनाएँ पंच-गंज नाम से प्रसिद्ध हैं | ये मसनवियाँ खुसरो ने अपने धर्म-गुरु शेख निजामुद्दीन औलिया को समर्पित की तथा उन्हें सुलतान अलाउद्दीन को भेंट कर दिया | पद्य के अतिरिक्त खुसरो ने दो गद्य-ग्रंथों की रचना की-

1. ख़जाइनुल फतह, जिसमें अलाउद्दीन की विजयों का वर्णन है |

2. एजाजये खुसरवी, जो एक अलंकार ग्रन्थ है |

अलाउद्दीन के शासन के अंतिम दिनों में खुसरो ने देवलरानी खिजखाँ नामक प्रसिद्ध ऐतिहासिक मसनवी लिखी |

अलाउद्दीन के उत्तराधिकारी उसके छोटे पुत्र कुतुबुद्दीन मुबारकशाह के दरबार में भी खुसरो ससम्मान राजकवि के रूप में बने रहे, यद्यपि मुबारकशाह खुसरो के गुरु शेख निजामुद्दीन से शत्रुता रखता था | इस काल में खुसरो ने 'नृहसिपहर' नामक ग्रन्थ की रचना की, जिसमें मुबारकशाह के राज्यकाल की मुख्य घटनाओं का वर्णन है |

खुसरो की अंतिम ऐतिहासिक मसनवी 'तुगलक'नामक है, जो उन्होंने गयासुद्दीन तुगलक के राज्यकाल में लिखी और जिसे उन्होंने उसी सुलतान को समर्पित किया |

फारसी के उल्लेखनीय महाकवि एवं खालिकबारी के शब्दशास्त्री खुसरो ने अपनी रचनाओं के माध्यम से अपने समय और समाज के साथ ही परवर्ती काव्य-परंपरा को भी पर्याप्त प्रभावित किया है | अमीर खुसरो की रचनाएँ काव्य-सौन्दर्य की दृष्टि से भी खड़ीबोली हिंदी की एक ऐसे काव्यकार की रचनाओं के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित होती हैं, जिनमें काव्य-सौन्दर्य अपने चरम पर दिखाई देता है | उनकी अंतर्लापिकाएँ, बहिर्लापिकाएँ, मुकरियाँ और दोहों में शिल्प के धरातल पर तो भिन्नताएँ हैं किन्तु अलग-अलग विधा की रचनाएँ होने के कारण उनमें कथ्यगत आकर्षण भी दिखाई देता है | खुसरो की रचनाएँ हिंदीभाषी समाज के लिए भाषा का सामर्थ्य बढ़ाने वाले मुहावरे के रूप में उपयोग में लायी जाती रही हैं | उनकी पहेलियाँ दो प्रकार की हैं | एक वे जिनमें उनके उत्तर अन्तर्निहित हैं, 'अंतर्लापिकाएँ' के अंतर्गत रखी गयी हैं, दूसरी वे जिनके उत्तर बाहर से खोजे जाते हैं, उन्हें 'बहिर्लापिकाएँ' के अंतर्गत रखा गया है | कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं –

"श्याम बरन औ' दाँत अनेक |

लचकत जैसी नारी ||

दोनों हाथ से खुसरो खींचे |

और कहे तू आरी ||" *(अन्तर्लापिका)*

"एक थाल मोतियों से भरा,

सबके सर पर औंधा धरा |

चारों ओर वह थाली फिरे,

मोती उससे एक न गिरे |" (*बहिर्लापिका*)

खुसरो की रचनाएँ धर्म और सम्प्रदाय की सीमाओं से बहुत ऊपर एक सहज हृदय की अभिव्यक्ति हैं | उनकी हिन्दवी की रचनाएँ लिखित रूप में प्राप्त नहीं होतीं | लोकमुख के माध्यम से लगातार चली आ रही उनकी रचनाओं की भाषा में निरंतर परिवर्तन होता रहा होगा और आज वह जिस रूप में प्राप्त होती हैं, वह निश्चय ही उसका एक परिवर्तित आधुनिक रूप है |

निष्कर्षतः अमीर खुसरो खड़ीबोली हिंदी की प्रबल लोकप्रिय परंपरा के वैसे सरल कवि हैं, जिनमें काव्य की दृष्टि से भले ही उत्कृष्टता का अभाव हो किन्तु भाषिक-सांस्कृतिक समन्वय की दृष्टि से उनका महत्व असंदिग्ध है |